Course-- M.A ,Education,Part -1

Paper --- 3rd, Philosophical Foundation Of Eduration

Prepared by -- Dr Meena Kumari

Topic-- Upnishad

उपनिषद

(1) प्रस्तावना -- भारतीय संस्कृति को चार चरणों में बांटा गया है प्रथम चरण वैदिक युग का, द्वितीय रामायण का , तृतीय महाभारत , तथा चतुर्थ पुराण काल है। भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में ग्रंथों तथा साहित्य का बहुत बड़ा योगदान रहा है । हमारे धर्म ग्रंथ ,वेद ,पुराण, उपनिषद आदि साहित्य में न केवल हमारे ज्ञान विज्ञान के अमृतकोष हैं बल्कि यह भारतीय संस्कृति के उत्कर्ष का इतिहास भी हैं ।आज भी ग्रंथों और साहित्य के प्रति आदर सम्मान तथा श्रद्धा दिखाई देती है। यह ईश्वरीय ग्रंथ साक्षात परम ब्रह्म स्वरूप तथा ईश्वर से ज्ञान का ग्रंथ मानते हैं ।इनमें धर्म ,अध्यात्म, ज्ञान तथा विज्ञान के उत्कर्ष की गाथा ही नहीं मिलती अपितु यह हमारी पुरानी संस्कृति ,सभ्यता ,सामाजिक व्यवस्था आदि के विषय में भी विस्तार से जानकारी उपलब्ध कराते हैं।

(2) उपनिषद के अर्थ एवम् उत्पत्ति -- उपनिषद शब्द का अर्थ है उपासना। इसे ब्रह्मविद्या भी कहते हैं ।वेद का अंतिम भाग होने के कारण इन्हें वेदांत भी कहा जाता है। उपनिषद वेद के ज्ञान कांड है । उपनिषद की उत्पत्ति ब्राह्मण तथा अन्य ग्रंथ आदि के बाद माना जाता है। वेदों को समझने के लिए ब्राह्मण तथा रहस्य के खोज के लिए उपनिषद की उत्पत्ति को माना गया है। ऐसा ग्रंथ जिसके द्वारा ब्रह्म का साक्षात्कार किया जा सके उसे उपनिषद की संज्ञा दी जाती है। उपनिषद का अर्थ को जब हम विस्तार से समझते हैं तो गुढ़ धर्म के रहस्य बताने वाले शास्त्र को भी उपनिषद कहते हैं। अरणयक और उपनिषदों की प्राचीन लौकिक संस्कृत से काफी मिलती जुलती है किंतु इन दोनों को ब्राह्मण की भांति सस्वर पढ़ने का विधान नहीं है। भाषा की दृष्टि से प्राचीन उपनिषदों का स्थान ब्राह्मणों एवं सूत्रग्रंथों के मध्य में आता है। उपनिषद ,ब्रह्मसूत्र और गीता को वेदांत दर्शन का तीन प्रस्थान या प्रस्थानत्रई कहा जाता है। इनमें उपनिषद में श्रवण ब्रह्मसूत्र में मनन और श्रीमद्भागवत गीता में अनवरत चिंतन की बात की जाती है। उपनिषदों का स्थान वैदिक साहित्य में बहुत उच्च है।ब्रह्म की उपासना आदि साधनों का वर्णन है ।आत्मतत्व का सुगमता से बोध हो इसके लिए भी ब्रह्म सूत्र की रचना की गई है और उसको उपनिषद के अंतर्गत लाया गया है । यहां तक कि वेदों के शिरोभाग के नाम से हैं इसका परिचय दीया जाता है और अध्यात्म ज्ञान के लिए उपनिषद ग्रंथ हीं एकमात्र साधन है। यह वेदांत सूत्र ,भगवत गीता आदि ज्ञानरत्नों से परिपूर्ण है ।वेदों की भांति उपनिषद काल को भी लेकर विभिन्न मान्यताएं हैं ।लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अनुसार इसका रचनाकाल 1800 से 1680 ईसा पूर्व होना चाहिए।
उपनिषद में परमात्मा की प्राप्ति हेतु विभिन्न साधन बतलाए गए हैं ।यह सभी साधन उपासना के अंतर्गत आते हैं। उपासना को दो वर्गों में बांटा गया है।

1)भेदोपासना और

2)अभेदोपासन

1) भेदोपासना -- इसमें तीन पदार्थ अनादि है-- माया(प्रकृति) ,जीव तथा मायापति अर्थात परमेश्वर।प्रकृति जड़ है , जीव अल्पज्ञ तथा परमात्मा सर्वज्ञ है। जो जीव परमेश्वर को वास्तव में जान लेता है ।वह समस्त दुख, कलेश से मुक्त हो जाता है ।मुंडकोपनिषद में कहा गया है एक साथ रहने तथा परस्पर स्वभाव वाले दो पक्षी जीव और परमेश्वर एक ही वृक्ष पर रहते हैं। उनमें एक तो वृक्ष के कर्म रूप फल को स्वाद ले कर खा रहा है दूसरा मात्र देख रहा है ।खाने वाला पक्षी जीव है तथा देखने वाला परमेश्वर अर्थात जीव आसक्ति में डूबा हुआ है जबकि परमेश्वर की महिमा का साक्षात्कार करके वह सभी माया से ऊपर उठ सकता है।

2) अभेदोपासना -- इसके अन्तर्गत तत तथा तवम दो भेद है। तत में भगवान के स्वरूप का जो कुछ जड़ चेतन है, सभी ब्रह्म स्वरुप है ऐसा मानकर उपासना होती है। तवम में जड़ चेतन जो भी है वह ब्रह्म ही हैं और जो ब्रह्म है वह मैं हूं ।जो कुछ है वह मेरा स्वरूप है ऐसा मानकर उपासना की जाती है और परम उपासक ब्रह्म स्वरुप को प्राप्त होता है।

(3)उपनिषद का वाङ्मय --इसके अंतर्गत चारों वेदों की सहिताएं ,उनकी व्याख्या करने वाले ब्राह्मण ग्रंथ,ऋषियों के तत्व चिंतन को विकसित करने वाले आरण्यक ग्रंथ और दर्शन को आधार देने वाली उपनिषद मुख्य रूप से आते हैं। वेद और वेदांत में विभेद करने हेतु वाङ्मय का वर्गीकरण किया जाता है। वहां वेद , ब्राह्मण, आरण्यक गृह सूत्र ,वेद के साथ और उपनिषद वेदांत में वर्गीकृत हो जाते हैं। ईशावाश्य उपनिषद शुक्ल यजुर्वेद की संहिता का अंतिम अध्याय है

साधारणतया ऐसा माना जाता है कि उपनिषद् आरण्यक के परिशिष्ट के रूप में है और अरण्यक ब्राह्मणों के उप ग्रंथ हैं ।लेकिन यह कहना कठिन है कि ब्राह्मणों और अरण्यकों और उपनिषदों को सदैव भिन्न-भिन्न शास्त्रों के रूप में ही माना गया है ।कई स्थानों में जिस विषय के संबंध में हम यह आशा करते हैं कि वह ब्राह्मण में होना चाहिए,वह अरण्यक में उपलब्ध होता है और अरण्यक की सामग्री उपनिषद की शिक्षाओं में समाविष्ट कर दिया गया है ।इससे यह सिद्ध होता है कि तीनों साहित्य एक ही विकास श्रृंखला की कड़ियां है और एक ही साहित्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

डयूसन के अनुसार इनके विभाजन का सिद्धांत इस प्रकार है -- ब्राह्मण ग्रंथ गृहस्थ वासियों के लिए लिखे गए, आरण्यक में वृद्धावस्था के जीवन के प्रयोग हेतु बनाए गए हैं और उपनिषद में विश्व बंधन का परित्याग करने वाले सन्यासियों के लिए दिए गए ज्ञान का वर्णन है । इस साहित्यिक वर्गीकरण की बात को छोड़ दिया जाए तो यह कहा जा सकता है उपनिषदों को प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने वैदिक साहित्य से अलग विभिन्न प्रकार के साहित्य के रूप में स्वीकार किए हैं, जिनमें ज्ञान मार्ग का चर्चा है।

उपनिषद की संख्या लगभग 200 बताई गई है किंतु उनमें से मात्र 108 को मान्यता मिली है और इन 108 में मात्र 12 महत्वपूर्ण एवं प्रमाणिक कोटि की है।सभी उपनिषद में शांति मंत्र की बात की गई है तथा भौतिक विश्व के समस्त पीड़ाओं,क्लेशों,दुंखों तथा कष्टों से मुक्ति एवं निराकरण हेतु दैवीय उपकार की प्रार्थना की गई है।

उपनिषद को भी परमात्मा की प्राप्ति हेतु विभिन्न साधनों में से एक साधन बतलाया गया है। इसमें अनेक ज्ञान है जो इंद्रिय मन की अधीनता से मुक्त कर मानव चेतना को जगाता है। इसे ही ऋषि चेतना भी कहा गया है। उनके द्वारा विश्व के संबंध में जो भी होता है उसे भी ऋषिचेतना ही कहते हैं । इसके द्वारा मनुष्य ज्ञान ,स्वाधीनता ,आनंद एवं कल्याण की पूर्णता होती है। यह सभी मनुष्य, सभी प्राणी और संपूर्ण विश्व को अपने में देखती है क्योंकि एक ही आत्मा शरीर में विभिन्न रूपों में ,विभिन्न आकृति प्रकृति में परभाषित हो रहा है पर बुद्धि चेतना इसका प्रत्यक्ष अनुभव करता है ।इस तरह से उपनिषद ज्ञान का स्रोत है और इसमें ब्रह्म से साक्षात्कार करने वाले परम तत्व को भी बताया गया है।